ठाकुर का कुआं

कथासार

'ठाकुर का कुआं' है। जो मानवता के हनन और निमर्मता के पोषण की बड़ी ही करुण कथा कहती है। इस कहानी के साथ ही एक और परिवार कावेरी की कहानी को स्थान दिया गया है एवं ओम प्रकाश बाल्मिकी की कविता 'ठाकुर का कुआं' को शामिल किया गया है। जो ठाकुर का कुआं के आस –पास घटने वाली और भी घटनाओं के अंतर रहस्य को संप्रेषित करता है और इस नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से सवाल भी उठता है।

नाटक की शुरुआत गाँव के प्रातः दृश्य से आरंभ होता है। हमेशा की तरह नमक बेचने वाला गाँव में आया हुआ है। ठाकुर के व्यवहार के बारे में और उसके होशियार चालों के बारे में गंगी को नमक बेचने वाला बंजारा सचेत करता है। बेगारी करने से मना कर देने पर ठाकुर के लठैत गाँव में समय बे समय गस्त लगाते दिखाई पड़ जाते हैं। इससे बेगारी पर न आने वालों के कस्बे में अजीब दहशत फैली हुई है। इसी कस्बे का जोखू कई दिनों से बीमार पड़ा है। इसकी पत्नी गंगी अपने बस्ती के कुएं से पानी भर लायी है। पानी में फैली बदबू के कारण पानी पीने लायक नहीं। जोखू प्यास से तड़पता है और गंगी अपने डर से समझौता कर आखिर ठाकुर के कुए से एक मटकी पानी लाने का निर्णय कर ही लेती है। रात के नौ बजे ठाकुर के कुए पर जाती है। वहाँ उसे कुप्पी के मंद प्रकाश में ठाकुर के लठैत एक जगह इक्कठ्ठे दिखते हैं। वह कुएँ की ओट के पीछे अंधेरे में छिपकर बैठ जाती है। सबके चले जाने के बाद वह जल्दी-जल्दी कुएँ के जगत पर जाती है और घड़ा पानी में डूबोकर उसे ऊपर खींच लेती है। जैसे ही घड़े को जगत पर रखने को होती है। तभी अचानक ठाकुर का दरवाजा खुलता है। वह आतंकित हो उठती है। घबड़ाहट में उसके हाथ से रस्सी और घड़ा दोनों छूटकर कुएँ में गिर जाते हैं। घड़े के पानी में गिरने और उसके हलकारों की आवाज सुनकर तथा ठाकुर के इतना कहते ही कि 'कौन है? कौन है? वह वहाँ से जान बचाने के लिए भाग खड़ी होती है। और रास्ते में उसे प्रभु की प्रतिकात्मक आवाज़ सुनाई पड़ती है। जो बार-बार यह कहना चाहती है कि आखिर जात और अभाव की ज्वाला में तुम्हारे कस्बे को जलना तुम सभी को जलना होगा। इस पर गंगी रुष्ट होकर अनसुना कर फिर दौड़ पड़ती है।

ठाकुर के कुंए पर हुई आहट से ठाकुर के आवाज़ से गंगी पानी से भरी मटकी छोड़ लाठी न पड़े के डर से अपने घर की ओर दौड़ पड़ी।

ठाकुर ने गंगी के कस्बे के एक परिवार कावेरी के परिवार को झूठी चोरी का आरोप लगा इतना पिटवाया था कि कावेरी का बाप चल बसा और कावेरी की माँ को ठाकुर के लठैतों ने खत्म ही कर दिया और इनकी अनाथ और युवा बेटियों कावेरी और विमला पर ठाकुर के लठैतों की तीखी न ज़र है। जिससे कावेरी लगातार जूझ रही है।

इधर गंगी दौड़ते हुए अपने घर पहुँचती है किसी तरह अपनी जान और लाज बचा कर पर हाय! घर जाकर देखती है कि जोखू लोटा को मुँह से लगाये वही बदबूदार पानी पी रहा है।